Yuva:

कहा जाता है कि कोई भी पेड़ तब तक ही जीवित रह पाता है, जब तक वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है। समाज में व्यक्ति की वे जड़ें संस्कृति है, जिससे जुड़ा रहना व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है। संस्कृति से कटा हुआ व्यक्ति कटी डोर की पतंग की भांति होता है, जो उड़ तो रहा होता है लेकिन मंजिल व रास्ता तय नहीं होता, न ही पता होता है कि वह कहां जाएगा।





वर्तमान परिदृश्य में समाज को देखें तो पता चलता है कि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति को दिन-प्रतिदिन पीछे छोड़कर आगे आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होती जा रही है। संस्कृति-संस्कार ऐसे अभिन्न अंग हैं जिनसे समाज तय होता है। कहा जाता है कि जिस प्रकार की संस्कृति व संस्कार किसी समाज में प्रचलित होंगे, उसी स्तर का समाज सभ्य माना जाता है। हमारे देश-प्रदेश की संस्कृति व संस्कार वैश्विक मंच पर आदर्श स्थान पर रहे हैं। भारतीय जीवनशैली को विश्व में सबसे श्रेष्ठ व सभ्य माना जाता रहा है। लेकिन समय के चक्र व पाश्चात्य प्रभाव ने कई संस्कृतियों के संस्कारों को उधेड़ कर रख दिया।

आज अधिकांश लोग संस्कृति व संस्कारों के साथ जीने को पिछड़ापन मानते हैं, लेकिन पिछड़े हुए तो उन्हें कहा जा सकता है जो अपनी संस्कृति व संस्कारों से छिटक कर अपना पाश्चात्यकरण कर चुके हैं। भारत की संस्कृति व सभ्यता का तर्क व वैज्ञानिक आधार रहा है, जिसने पूरे विश्व को जीवन मार्ग पर चलना सिखाया, तभी भारत को ‘विश्व गुरु’ जैसी उपमाओं से अलंकृत किया जाता रहा है। लेकिन वर्तमान में समाज का अधिकांश वर्ग आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपनी संस्कृति व संस्कारों को भुला चुका है। माता-पिता को सम्मान देने की बजाय उन्हें वृद्धाश्रमों में जीवन काटने के लिए या यूं कहें कि मौत के इंतजार के लिए छोड़ दिया जाता है। जिन माता-पिता ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपना जीवन कष्टों में काटा, आज उन्हें घरों से ही निकाला जा रहा है।

जहां विवाह-शादियों में बेटियों को डोलियों में विदा किया जाता था, आज स्टेज पर ही सारी औपचारिकताएं निभा दी जाती हैं। युवा खेलों को छोड़कर नशे को ही खेल समझ बैठे हैं। अपनी ताकत गलत कार्यों में लगाकर युवा पीढ़ी संस्कृति की जड़ों से कट चुकी है। पहले गुरु-शिष्य के संबंधों की महिमा लोगों की जुबां पर होती थी, आज युवा गुरुओं को सम्मान देने की बजाय कई बार तो सामने आने पर रास्ता बदल लिया करते हैं।

जहां त्यौहारों व रीति-रिवाजों को सामूहिकता व अपनेपन की भावना तथा संस्कृति के एक हिस्से के रूप में मनाया जाता था, समाज में हर्षोल्लास व भातृभाव रहता था, आज उन्हीं त्यौहारों पर बस सोशल मीडिया में बधाई के फोटो डालकर इतिश्री करना व ऐसे अवसरों पर नशा करने का प्रचलन बढ़ गया है, मानो आज के युवाओं को नशे करने के लिए अवसर चाहिए हो। त्यौहारों के अवसर पर जहां लोक संगीत व लोक संस्कृति का परिचय देखने को मिलता था, वहां आज ऊंची आवाज में डी.जे. लगाकर इन त्यौहारों की औपचारिकताएं पूरी होती नजर आती हैं।

हमारी संस्कृति में सहयोग का बड़ा महत्व था, हर सुख-दुख में साथ खड़े रहने की भावना देखने को मिलती थी, लेकिन आज समाज व लोग व्यक्तिवादी होते जा रहे हैं, केवल अपने में ही समाज को समझते हैं। अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त किए लोग समाज में अमानवीय कृत्यों में संलिप्त पाए जाते हैं, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा कितनी भी हासिल कर ली जाए वह शिक्षा अगर आपके व्यवहार में न उतरे तो उसका कोई औचित्य नहीं रह जाता।

कई दफा लोग साक्षर होने का दावा करते हैं, मगर बात करने के ढंग से वे अक्सर अपना वास्तविक परिचय दे दिया करते हैं जिससे शिक्षा का कोई औचित्य नहीं रह जाता। इससे अच्छे तो गांवों के अशिक्षित लोग, तहजीब व व्यवहार में सादगी तथा विषयों पर मजबूत पकड़ रखने वाले हमारे बुजुर्ग हैं, जिन्होंने भले ही स्कूलों में जाकर कभी किताबें नहीं पढ़ी हों, लेकिन समाज व लोगों को पढ़कर एक आदर्श जीवनशैली को अपनाए हुए हैं, अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं।

लेकिन समाज के अत्याधुनिक होने का दावा करने वाले तथाकथित महामनुष्य न जाने किन बातों में आधुनिक हैं। अगर उन्हें मानवीय व्यवहार व सम्मान न करना आए तो आधुनिकता की ऐसी अंधी दौड़ में लडख़ड़ाने से बेहतर है सामान्य जीवन व्यतीत करना। आधुनिक होने की बातें की जाती हैं मगर आधुनिक और स्मार्ट व्यक्ति नहीं बल्कि इनके महंगे स्मार्टफोन हैं, जिनसे लोगों को लगता है वे भी इन मोबाइलों की तरह स्मार्ट हैं, लेकिन यह सबसे बड़ा भ्रम है।

आज का मनुष्य निर्भर प्रवृत्ति में इतना लीन हो गया है कि उसे सब कुछ आर्टिफिशियल चाहिए, स्वयं कुछ भी नहीं करना है। वह कहा जाता है न कि आज के मनुष्य सोशल मीडिया में तो सोशल होना चाहते हैं, मगर सामाजिक नहीं बनना चाहते, केवल नाम से आधुनिकतावादी कहलवाना चाहते हैं। यह आधुनिकतावादी होने का भ्रम लोगों को अपने मस्तिष्क से निकाल कर व्यावहारिक जीवन में  चिंतन करके अपनी जड़ों से जुड़कर अपनी संस्कृति व सभ्यता को जानना चाहिए, तभी आधुनिकतावादी कहलाने का भी औचित्य रह पाता है, अन्यथा मानव समाज इतना अधिक व्यक्तिवादी हो रहा है कि लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता कि साथ वाले घर में रह रहे व्यक्ति को क्या समस्या है।

आज के समय में सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले लोगों की फौज वास्तव में समाज में सक्रिय रहने वाले लोगों से कहीं अधिक हो चुकी है। अब केवल सोशल प्लेटफॉम्र्स पर ही भावनाएं व्यक्त की जाती हैं और लिंक, लाइक, लाइव, कमैंट व शेयर की अपील के साथ ही यह सफर समाप्त भी हो जाता है। आज का समाज ‘चित्रजीवी’ हो रहा है, लोगों को चरित्र की कोई परवाह नहीं है। आए दिन, खासकर युवा स्कूलों-कॉलेजों में लड़ते-झगड़ते नजर आते हैं।

**क्या युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति भूल रही है**

किसी भी समाज की पहचान उसकी संस्कृति से ही होती है, लेकिन यह देख कर मुझे बहुत दुख होता है कि हमारी युवा पीढी तेजी से अपनी संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों को भूलती जा रही है। बडों का सम्मान करना, अपने त्योहार मनाना, पास-पडोस के लोगों की सहायता करना जैसे पारंपरिक जीवन मूल्य धीरे-धीरे हमारे समाज से दूर होते जा रहे हैं। युवाओं में सहनशीलता ख्ात्म होती जा रही है। लोग अपने पारंपरिक पहनावे और खानपान को छोडकर पश्चिमी रहन-सहन को अपनाने लगे हैं। मेरे विचार से आधुनिक होने में कोई बुराई नहीं है। विदेशी भाषा, पहनावे और खानपान से परिचित होना बहुत अच्छी बात है, लेकिन अपनी परंपराओं को छोडकर पूरी तरह पश्चिमी संस्कृति को अपनाने से हमारी अपनी पहचान खो जाएगी। आजकल हमारी युवा पीढी यही कर रही है। इसका सबसे बडा नुकसान यह है कि वह भ्रमित और दिशाहीन होती जा रही है। मेरा मानना है कि हमें आधुनिकता और परंपराओं के बीच संतुलन बनाकर चलना चाहिए, तभी हमारे साथ देश और समाज का भी विकास होगा।

मुझे ऐसा नहीं लगता कि हमारी पीढी अपनी संस्कृति भूल रही है। समय के साथ युवाओं की जीवनशैली में बदलाव आना स्वाभाविक है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें अपनी संस्कृति से प्यार नहीं है। भारतीय लडकियां भले ही वेस्टर्न ड्रेसेज पहनने लगी हैं, पर त्योहारों के अवसर पर वे अपने हाथों में मेहंदी रचाना नहीं भूलतीं। कुछ युवाओं के व्यवहार के आधार पर पूरी पीढी के बारे में कोई भी राय कायम करना उचित नहीं है। मेरे विचार से परंपराओं के नाम पर अंधविश्वासों का साथ देना गलत है। हमें अपनी संस्कृति की अच्छी बातों को ही अपनाना चाहिए।

# युवा पीढ़ी अपनी ऊर्जा को सही दिशा में कैसे लगा सकती है

आज मानव जीवन का वह चरण जिसे "युवा" कहा जाता है लुप्त होता जा रहा है। क्यों? आजकल अधिकतर लोग बचपन से ही बुढ़ापे की ओर छलांग लगा रहे हैं। युवावस्था वर्तमान में जीने का समय होने के साथ-साथ मन को प्रशिक्षित करने का आदर्श चरण भी है। लेकिन क्या वर्तमान पीढ़ी इस काल का सही उपयोग कर रही है?

यदि हम अपने युवाओं में उचित ज्ञान और दिशा पैदा कर सकें, तो हम उनकी ऊर्जा और उत्साह को दिशा दे सकते हैं और असाधारण चीजें हासिल कर सकते हैं। यदि हम अपने युवाओं को करुणा, अखंडता, विवेक और समाज के लिए कुछ अच्छा करने की तीव्र इच्छा जैसे सही सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करके सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं, तो वे हमारे समाज को बदल देंगे। आलस्य, कम आत्मसम्मान और असफलता का डर जैसे गुण हमें जीवन में पीछे खींचते हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति, सही ज्ञान और अथक प्रयास से हम इन पर काबू पा सकते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि हमारे जीवन का सबसे ऊर्जावान समय हमारी युवावस्था है। यह जीवन का मध्यबिंदु है - हमारा मन न तो अज्ञानी है, जैसा कि बचपन में होता है, न ही यह पूरी तरह से विचारों से घिरा हुआ है, जैसा कि बुढ़ापे में होता है। इसलिए, वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से, यह वह अवधि है जब हम जीवंतता और सुंदरता के चरम का अनुभव करते हैं। युवावस्था में लोग काफी उत्साह और ऊर्जा महसूस करते हैं। उनके हृदय कई उद्यम करने और उनमें सफल होने के आवेग से भरे हुए हैं। हालाँकि, इस तीव्र ऊर्जा के कारण, वे अक्सर चीजों पर ठीक से सोचे बिना कार्य करते हैं; वे अपना धैर्य और विवेक खो देते हैं। यही जवानी की कमी है. आज बहुत से युवाओं के पास ज्ञान तो है लेकिन जागरूकता की कमी है। जागरूकता के बिना ज्ञान अधूरा है - सुगंध के बिना फूल या अर्थ के बिना शब्द की तरह।

यहाँ एक प्रेरणादायक कहानी है. एक बार, एक महिला पार्क में घूम रही थी, तभी उसने एक बूढ़े आदमी को एक बेंच पर बैठे हुए देखा, जो मन ही मन मुस्कुरा रहा था। महिला उसके पास आई और बोली, “आप बहुत खुश लग रहे हैं! आपके लंबे और सुखी जीवन के पीछे क्या रहस्य है?”

बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, “ठीक है, जैसे ही मैं बिस्तर से उठता हूँ, मैं तुरंत व्हिस्की की दो पूरी बोतलें पी लेता हूँ। फिर मैं सिगरेट का एक पैकेट पीता हूं। दोपहर के भोजन में, मैं जी भर कर तला हुआ चिकन और स्टेक खाता हूँ। मैं बाकी दिन हेवी-मेटल संगीत सुनने में बिताता हूं। मैं पूरे दिन चिप्स, मिठाइयाँ और अन्य जंक फूड खाता हूँ। इसके अलावा, मैं आमतौर पर सप्ताह में चार या पांच बार गांजा पीता हूं। और व्यायाम? मैं इसके बारे में सोचता भी नहीं!”

महिला सदमे में थी. "अद्भुत!" उसने कहा। “मैंने कभी नहीं सुना कि आपकी तरह की जीवनशैली वाला कोई व्यक्ति इतनी अधिक उम्र तक जीवित रहा हो। वैसे आपकी उम्र क्या है?"

"छब्बीस," उसने उत्तर दिया।

इस तरह कई लोग अपनी बहुमूल्य जवानी बर्बाद कर रहे हैं। इसका कारण क्या है? बचपन में उन्हें अपने माता-पिता से उचित संस्कार नहीं मिल पाते हैं। सारा जोर पैसे और पढ़ाई पर है. इनकी आवश्यकता है, लेकिन हमें अपने बच्चों में सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने का भी ध्यान रखना होगा। यहां तक ​​कि अगर कोई व्यक्ति सबसे महंगी कार खरीदता है और उसमें उच्चतम ग्रेड का पेट्रोल भरता है, तो भी इंजन शुरू करने के लिए बैटरी की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार जीवन की गाड़ी को चलाने के लिए हमें सत्यता, धैर्य और करुणा जैसे सार्वभौमिक मूल्यों की आवश्यकता है।

हमारे युवाओं में चीजों को सही ढंग से करने का सही नजरिया है। वे अथक भी प्रतीत होते हैं। यदि वे अपनी ऊर्जा को सही दिशा में निर्देशित करना सीख लें तो वे दुनिया में चमत्कार कर सकते हैं। एक बार जब युवाओं में बदलाव आएगा तो जल्द ही दुनिया में भी बदलाव आएगा। यदि हम अपने युवाओं की शक्ति का उपयोग समाज की भलाई के लिए करना चाहते हैं, तो सबसे पहले यह होना चाहिए कि हम उनमें सार्थक लक्ष्यों के बारे में जागरूकता विकसित करने में मदद करें। उनका लक्ष्य अच्छी नौकरी ढूंढने और आरामदायक जीवन जीने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। यदि हम समुद्र की सतह पर रहकर मछलियाँ पकड़ें तो यह पर्याप्त नहीं है। हमें भी समुद्र में गहराई तक गोता लगाने और मोती इकट्ठा करने में सक्षम होना चाहिए।

हमारे युवाओं को समाज में व्यावहारिक परिवर्तन लाने में सक्षम होना चाहिए और साथ ही, अपने जीवन को अधिक सार्थक और धन्य बनाना चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि वे अपने ज्ञान को सांसारिक चिंताओं तक सीमित न रखें। उन्हें भौतिक ज्ञान को आध्यात्मिक समझ के साथ जोड़ने की जरूरत है। उन्हें अपने आसपास पीड़ित लोगों के प्रति अपने हृदय में करुणा विकसित करनी चाहिए। जीवन के सबसे कठिन दौर का बहादुरी से सामना करने और आगे बढ़ने के लिए उनमें आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास भी होना चाहिए। केवल आत्म-बलिदान से ही महान कार्य होते हैं। इसलिए, उन्हें कोई भी बलिदान सहने और कोई भी कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। युवाओं को जो अच्छा है उसे पहचानने और उसे अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करने की क्षमता हासिल करनी चाहिए। इसी तरह, उन्हें यह पहचानने की ज़रूरत है कि क्या बुरा है और उससे दूर जाने की ताकत होनी चाहिए।

हमारे देश की एक ऐसी संस्कृति है जो हमारे समाज को इन सभी मूल्यों को आत्मसात करने में मदद करती है। इस देश ने कई महान सामाजिक गुरुओं को जन्म दिया है जो असाधारण दूरदर्शी भी थे। अतीत के हमारे महान ऋषियों ने वह ज्ञान प्रदान किया है जो हमें अपने दुखों से पूरी तरह उबरने में मदद करता है। हमें बस अपने युवाओं की शक्ति को इस अमूल्य खजाने की ओर निर्देशित करना है।

इस प्रकार, जब ज्ञान और विवेक की शक्ति एकीकृत हो जाती है, तो यह हमारे युवाओं में जन्मजात शक्ति और सकारात्मक प्रवृत्तियों को सामने लाएगी और वे शाश्वत प्रेम, शांति, खुशी और जीत पा सकेंगे।

# आज की युवा पीढ़ी और राष्ट्र के प्रति अभिमान – स्वामी विवेकानंद जयंती पर विशेष

भारत एक प्रचंड युवा शक्ति से परिपूर्ण देश है। आंकड़ों के अनुसार देश मे 22 प्रतिशत जनसंख्या 18 से 29 वर्ष आयु वर्ग की है। ये युवा इस देश के मुख्य आधार स्तंभ हैं । यह स्तंभ जितना मजबूत और राष्ट्रनिष्ठ होगा, देश उतना ही आगे बढ़ेगा। फ्रेंच राज्य क्रांति के प्रणेता रूसो ने कहा था कि , “आपके देश में युवाओं के होठों पर कौन से गीत है ? मुझे बताओ, मैं तुम्हारे देश का भविष्य बताता हूं।” रूसो के वक्तव्य को किसी भी कसौटी पर जांच कर देखा जाए तो उसकी सत्यता स्वीकारणीय है। इस कसौटी को देश, काल, स्थिति आदि किसी का भी बंधन नहीं है । भारत के विषय में कहा जाए तो पिछले कुछ वर्षों में युवाओं में देशभक्ति की ज्योत जलती हुई प्रतीत होती है, फिर भी इसे देशभक्ति की धधकती ज्योत में बदलने के लिए एक ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है।

भारत के गौरवशाली युवाओं का इतिहास: भारत का गौरवशाली युवाओं का एक लंबा इतिहास रहा है। आदि शंकराचार्य ने 11 वर्ष की आयु में आत्मज्ञान प्राप्त किया और हिंदू धर्म की पुनर्स्थापना के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। संत ज्ञानेश्वर महाराज ने 16 वर्ष की अल्पायु में महान ग्रंथ ज्ञानेश्वरी की रचना कर समाज को दिशा दी। 16 वर्ष की आयु में छत्रपति शिवाजी महाराज जी ने अपने साथियों के साथ रायरेश्वर के मंदिर में हिंदवी स्वराज्य की स्थापना का संकल्प लिया। मात्र 30 वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में धर्मपरिषद में एक ऐतिहासिक भाषण दिया और दुनिया भर में हिंदू धर्म का ध्वज लहराया । अपने 39 वर्ष के कार्यकाल के दौरान, बाजीराव पेशवा जी ने मराठा साम्राज्य का विस्तार किया और सीमा पार जाकर अटक तक झंडे फहराए। हाल के समय में, लगभग सौ वर्ष पूर्व , बहुत ही कम आयु के युवा भारत की स्वतंत्रता के लिए हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गए। ऐसे कई प्रतिभाशाली नवयुवकों के उदाहरण हैं जिन्होंने धर्म और राष्ट्र के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया । आज इस गौरवशाली युवा की परंपरा का अंत हो गया है, यह निश्चित है! आज देश में असाधारण देशभक्ति और धर्मपरायणता वाले युवा हैं; परंतु इनकी संख्या कम है। भारत के युवाओं की समग्र तस्वीर पर दृष्टि डालें तो यह अधिक ‘अर्थ’ केंद्रित लगता है। यदि यह केंद्र ‘अर्थ’ से ‘राष्ट्र’ की ओर चला जाए तो देश की प्रगति में अधिक समय नहीं लगेगा।  
 **वर्तमान की दयनीय स्थिति:** आज का औसत भारतीय युवा हिंसक और अश्लील धारावाहिकों, फिल्मों, व्यसनों, अश्लील साहित्य के कारण मार्ग भटक गया है। बड़े पैमाने पर ‘पैकेज’ के रूप में गाड़ी-बंगला इन भौतिक सुख सुविधाओं को जीवन का ध्येय मानने के कारण युवाओं में आत्मकेंद्रितता बढ़ रही है, ऐसे स्वार्थी युवक जहां जन्मदाता माता-पिता को भी वृद्धाश्रम में रखते समय तनिक भी विचार नहीं करते, वहां वे राष्ट्र के लिए कुछ योगदान देंगे यह अपेक्षा रखना बहुत बड़ी गलती होगी । नशे की लत के कारण फिल्म अभिनेताओं पर हुई  कार्यवाही देखकर दु:खी होने वाले युवा, जो फिल्म अभिनेताओं के निजी जीवन की घटनाओं को पढ़ने में रुचि रखते हैं, जो ‘तकनीकी प्रेम’ की आड़ में मोबाइल फोन, टेलीविजन, कंप्यूटर से ग्रस्त हैं, जो मुसीबत में फंसे हुए व्यक्ति को मदद करने की अपेक्षा उसकी असहाय स्थिति का चित्रीकरण करने मे मग्न हैं, ऐसे युवक राष्ट्र निर्मिति के कार्य में योगदान नहीं दे सकते ।

आज भी अनेक युवक भारत के राष्ट्रगीत और राष्ट्रीय गान के सन्दर्भ में  भ्रमित हैं। आज भी बहुत से लोग ‘वंदे मातरम’ को पूर्ण नहीं गा सकते हैं। गोवा में कॉलेज के छात्रों के एक सर्वेक्षण के दौरान, छात्रों द्वारा भारत के राष्ट्रगान के रूप में ‘हम होंगे कामयाब’, ‘ए मेरे वतन के लोगाें’ जैसे जवाब मिले। पोद्दार इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि मुंबई, बैंगलोर और चेन्नई में 40 प्रतिशत छात्र राष्ट्रगान ठीक से नहीं गा सके। यदि राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति उदासीनता है, तो देशभक्ति के विषय में प्रश्न उठता है।

स्वामी विवेकानंद जी ने एक बार कहा था, “आज के युवा, देश को कैसे विकसित करें इसकी अपेक्षा कैसे बालों का सौंदर्य करें ।” इसके लिए अधिक चिंतित हैं । ‘देश ने मुझे क्या दिया है?’, इसकी अपेक्षा मैं देश को और क्या दे सकता हूं?’ इसका विचार होना चाहिए ।

**राष्ट्रभक्ति का प्रवाह क्षीण होने के कारण :**स्वतंत्रता पूर्व काल में देशभक्ति से प्रभावित हुए युवा पीढी की देशप्रेम की भावना स्वातंत्र्योत्तर काल में क्षीण होने के कई कारण हैं। इसके पीछे मैकाले रचित शिक्षाशास्त्र मुख्य कारण है। आज डिग्री के कागजात लेकर विश्वविद्यालय से निकलने वाले युवाओं को नौकरी के लिए भटकना पड़ रहा है। यह एक सच्चाई है कि किताबी ज्ञान से स्नातक करने वाला एक युवा गहन ज्ञान प्राप्त करने के स्थान पर व्यावहारिक और यथार्थवादी दुनिया में अप्रभावी होता जा रहा है। फ्रांसीसी क्रांति कैसे हुई?, द्वितीय विश्व युद्ध कैसे हुआ?, इसका इतिहास आज शैक्षिक पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जाता है; परंतु पेशवाओं ने सरहद पार झण्डा कैसे फहराया ?, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम कैसे हुआ ? विजयनगर का साम्राज्य कैसे खड़ा रहा ? भारत की प्राचीन प्रगल्भ संस्कृति कैसी थी ? विज्ञान-तंत्रज्ञान में भारत कितना अग्रसर था ? भारत का सकल राष्ट्रीय उत्पादन का हिस्सा 30 प्रतिशत कैसे पहुंचा था ? इस विषय के बारे में युवा वर्ग को अनभिज्ञ रखने के कारण उनमें देशभक्ति निर्माण होने में बाधा उत्पन्न हुई है। उस विकृत इतिहास को थोपकर भारत के सभी गौरवशाली स्थानों को हीनता के केंद्र में बदल दिया गया है, तो उनमें देशभक्ति का निर्माण कहाँ से होगा? जो समाज अपने इतिहास को भूल जाता है वह एक उज्जवल भविष्य नहीं बना सकता। इसके लिए सिर्फ अकादमिक पाठ्यक्रम ही नहीं बल्कि मीडिया भी जिम्मेदार है। पाक्षिक ‘आर्यनीति’ के संपादक श्री. सत्यव्रत सामवेदी ने कहा था कि देश के युवाओं में देशभक्ति की प्रेरणा देने में मीडिया की विफलता राष्ट्र के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण है! आज, युवा लोगों को फिल्म अभिनेताओं के नाम और उनके जन्मदिन से अवगत कराया जाता है; लेकिन क्रांतिकारियों और उनकी जयंती और वर्षगांठ के नाम ज्ञात नहीं हैं। जब यह स्थिति बदलेगी तो देश का वास्तविक विकास होगा।

**राष्ट्रभक्ति के अभाव के दुष्परिणाम :**राष्ट्रभक्ति के अभाव के कारण आज ‘राष्ट्र प्रथम’ की अपेक्षा  ‘स्वार्थ प्रथम’ यह समीकरण बन गया है। आज के समय में अनेक बुद्धिमान युवा धनार्जन हेतु विदेशों में जा रहे हैं हैं। तथाकथित समाज कल्याण के नाम पर किए जाने वाले आंदोलनों में युवा पत्थर फेंककर, आग लगाकर और सड़कों को अवरुद्ध करके राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं। कई लोग कानून अपने हाथ में लेते हैं। उन्हें इस बात का भान भी नहीं है कि राजनीतिक दल उनकी भावनाओं से खेल रहे हैं और अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए उनका उपयोग कर रहे हैं, जिस प्रकार जलती हुई लकड़ी घर को जला कर राख कर देती है, उसी प्रकार युवा पीढ़ी अपने साथ अपने देश का भी विनाश कर रही है,ऐसे दिखाई देता है। आज युवा पीढ़ी को जागृत कर तथा सन्मार्ग पर लगा कर युवा शक्ति का होने वाली हानि रोकने की आवश्यकता है ।

**राष्ट्रभक्ति कैसे निर्माण करें? :** देशभक्ति दिखाने के लिए हर किसी को सीमा पर जाकर लड़ना है, ऐसा नहीं है ; बल्कि कई सरल कार्यों का पालन करके भी व्यक्ति अपने आप में देशभक्ति का संस्कार निर्माण कर सकता है। देशभक्ति बढ़ाने के लिए अपनी स्वभाषा और स्वसंस्कृति पर गर्व करना चाहिए। इस गौरव को बनाने के लिए स्वभाषा और स्वसंस्कृति का अध्ययन करना, उनकी विशेषताओं को जानना आवश्यक है।

 क्रांतिकारियों और देशभक्तों के चरित्रों का पठन करके देशभक्ति की ज्योत प्रज्वलित की जा सकती है। 15 अगस्त-26 जनवरी को गाड़ियों पर कागज के झंडे फहराने की अपेक्षा उस समय का राष्ट् और धर्म कार्यों में उपयोग करना और दूसरों को इसके बारे में जागरूक करना, यह एक राष्ट्रीय सेवा भी है। सड़कों पर गिरे राष्ट्रीय ध्वज को उठाकर और उन्हें स्थानीय प्रशासन को सौंपना, दूसरों को तिरंगे के केक न काटने की सलाह देना, तिरंगे के रंग के कपड़े या मास्क का उपयोग न करने की सलाह देना, इससे भी राष्ट्रीय अस्मिता के अनादर को रोकने के कार्य में योगदान किया जा सकता है।

आज विकास या धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भारत विरोधी भावनाओं को व्यापक रूप से फैलाया जा रहा है। ऐसी राष्ट्रविरोधी विचारधाराओं का आज खंडन करने की आवश्यकता है। कानून का पालन करना, संकेतों का पालन करना, अपना काम ईमानदारी और सही तरीके से करना, अन्याय के विरुद्ध वैध तरीके से लड़ना, पूर्वजों के माध्यम से प्राप्त स्वतंत्रता को सुराज्य में बदलने का प्रयास करना भी राष्ट्रीय सेवा है। क्रिकेट मैच में भारत की जीत के बाद पटाखे फोड़ना,15 अगस्त और 26 जनवरी को देशभक्ति के गीत का ‘रिंगटोन’ लगाना सच्ची देशभक्ति नहीं है, तथापि देश के लिए बलिदान देने के लिए तैयार रहना, सुव्यवस्था निर्माण होने के लिए प्रयास करना देश भक्ति है। अपनी बुद्धि और कौशल्य का उपयोग राष्ट्रोध्दार के लिए करना, खरी राष्ट्र भक्ति है । धर्म राष्ट्र का प्राण है। इसलिए हमारी देशभक्ति को साधना की अर्थात उपासना के साथ की आवश्यकता है। छत्रपति शिवाजी महाराज तथा स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रीय उत्थान के लिए कार्य करते हुए अखंड साधना भी की थी । इसी प्रकार यदि युवा सनातन धर्म का पालन करें और साधना करे तो उनका व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास भी होगा । उनके कार्य के परिणाम में भी वृद्धि होगी। जब युवाओं का उत्थान होगा तभी समाज अर्थात राष्ट्र का उत्थान होगा ।